

जीवन लौट आया

उसकी बड़ी-बड़ी आँखें थीं, जिनमें से आभा झलक रही थी। उसके हाथ थे मानो कमल के फूल। वह दूध छिड़कती हुई चबूतरे पर चढ़ी। वे लोग उसके सिर पर ठीकरे का ढक्कन पकड़े हुए थे। एक फुल सूट पहने युवक ने पास खड़ी युवती के कान में कहा, “यह ढक्कन तो मुझे किसी मूर्ख वाली कहानी याद दिला रहा है। जिसमें एक मूर्ख के अक्लमंदी वाले कथन पर वाह वाह करते हुए कुछ लोगों ने उस के मुख पर ऐसा ही एक ढक्कन बाँध दिया था। यह कह कर कि उसकी अक्लमंदी कहीं चली न जाये।” यह सुन कर वह युवती दोनों हाथ कमर पर रखकर खूब ठहाके मारने लगी।

पास पड़ौस की जो महिलाएँ बाहर इकट्ठी हुई थीं, वे शगुन के तौर पर विवाह गीत गाने लगीं, “दुल्हा दुल्हन ले आया....” परन्तु विवाह गीत से आनन्द नहीं आ रहा था। पास के नल पर सीरू की माँ कपड़े धो रही थी। उसकी सोंटी की आवाज़ गीत के आनन्द में विघ्न डाल रही थी।

बेटे का विवाह एक सप्ताह पूर्व हुआ था, परन्तु विवाह पूना में हुआ था। इसलिये बहू को कल्याण कैम्प के बैरक वाले नये घर के आज ही दर्शन हुए थे।

पड़ौस की महिलाएँ बहू को देखने आईं। किसी ने कहा, “कमल जैसी है।” किसी ने कहा, “पद्मनी है।” और किसी ने कहा, “गोपाल आखिर विजय श्री प्राप्त कर आया है।” परन्तु दूल्हे की मौसी ने कमर को मटका कर कहा, “यह क्या है! कहाँ है इसमें वह लाली? मेरी बहन जब ब्याही थी, तब लहू उसके गालों से टपक रहा था। दूध जैसी सफ़ेद थी मेरी बहन।”

सभी महिलाएँ बहू की सास की ओर देखने लगीं। “मस्जिद भले ही वीरान हो गई थी, परन्तु उसकी मेहराब अब भी मौजूद थी।”

बहू की सास के नयन नक्ष अभी तक बहुत अच्छे थे। उसकी चमड़ी ज़रा सूखी और पीली थी। उसने बड़ी खुनस से कहा, “तो क्या? गाल तो मेरे ऐसे थे कि प्रत्येक आगंतुक कहती थी— सुखी लगाई है क्या इसने? परन्तु तब तो खाते थे शुद्ध देशी घी। हमारे अपने का कारोबार था कराची में....।” कहते कहते उसके मुख से मुस्कराहट उड़ गई, मानो सुख की यादों को खोदते हुए, दुख के गुबार उड़ने लगे थे।

दूसरे दिन गोपाल की माँ ने विवाह गीतों का कार्यक्रम आयोजित किया था। पास पड़ौस की महिलाओं ने ढोलक पर दम दम लगा रखी थी। “विवाह से पहले दूल्हा

अंगूठी ले आया...." और "मेरा भैया बना है दूल्हा....." जैसे विवाह गीत गाये जाने लगे। शोर मच गया। दुल्हन ने अपनी शर्मायी हुई आँखें उठाकर विवाह गीत गाने वाली की ओर देखा। पतली सी सुन्दर लड़की थी। होंठ रंगे हुए, गाल सुन्दर। वह धीमी गति से चलकर दरी पार आकर बैठ गई। गोपाल की माँ की दुल्हन से आँखें मिलीं तो उसके मुख पर मुस्कराहट फैल गई। लेकिन दुल्हन ने नज़रें झुका दीं।

नया विवाह गीत प्रारम्भ हुआ। विवाह गीत गाने वाली महिला की सास सोहनी ढोलक बजा रही थी। उसकी ननद विवाह गीत गा रही थी और बीच बीच में खड़ी होकर नृत्य कर रही थी। उसने एक छोटी सी नाटिका भी कर दिखाई, जिसमें एक अविवाहित लड़की धनवान बूढ़े से विवाह करने की बजाय एक निर्धन युवक से विवाह करने को तैयार हो रही थी। सभी महिलाएँ उससे मज़ाक कर रही थीं। कह रही थीं, "युवक तुझ से पानी भी भरवायेगा...साधारण कपड़े पहनने को देगा....कपड़े भी धुलवायेगा....नौकरी करवायेगा....और अविवाहित लड़की की भूमिका निभाने वाली नाचते हुए हँस कर कह रही थी, "करूँगी.....करूँगी। खुशी से साधारण कपड़े पहनूँगी" इत्यादि।

ढोलक की दम दम से दुल्हन का जी ज़ल रहा था। उसकी आँखें उस विवाह गीत गाने वाली में अटक गईं। नृत्य क्या इसका धंधा है? अथवा शौक है? दुल्हन को लगा, नाचना इसके लिये सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं था। उसके मुख पर ऐसी शांत मुस्कराहट थी कि नाटक के चलते दुल्हन के गाल लाल और होंठ गुस्ताख हो गये थे। उसकी आँखों की दृष्टि इतनी गहरी हो गई, मानो विवाह गीत गाने वाली नृत्यांगना उसकी ही आत्मा में छुपी निडर नारी का उल्लेख कर रही हो। विवाह गीत गाने वाली ने दुल्हन के सुन्दर मुख को ठुड़ी से हिलाते हुए कहा, "दुल्हन वह तुझ से आँखें मिलायेगा।" वहाँ बैठी सभी महिलाएँ हँसने लगीं। दुल्हन शर्म के मारे लाल हो गई। अचानक उसकी दृष्टि द्वार की ओर चली गई। वहाँ अपने पति को खड़ा देखकर, वह और अधिक पानी पानी हो गई। वहाँ से उठकर जाने लगी तो नव विवाहित युवतियों ने उसे पकड़कर बिठा दिया क्योंकि उसकी सास ने उन्हें इशारा किया था। फिर भी सास उससे जो छुपाना चाह रही थी, उसने उसे छुपाने दिया और स्वयं बैरक के बरामदे की ओर चली गई। विवाह गीतों का कार्यक्रम समाप्त हो चुका था। गायक महिलाएँ वापिस जा रही थीं, परन्तु जाते जाते आपस में फुसफुसाहट भी कर रही थीं, जिसे दुल्हन ने सुन लिया। गायिका की सास कह रही थी, "भारत में विवाह गीत गाने वाली महिलाओं का सम्मान ही नहीं होता... किसी ने पैसे भी न्यौछावर नहीं किये।"

गायिका की लड़की ने कहा, "लोग हो गये हैं मक्खीचूस। खाना खाते हैं तो समझते हैं कि देश पर एहसान करते हैं।"

दुल्हन ने सब कुछ सुना फिर भी उसने उस ओर नहीं देखा। मानों सास ने जो उससे छुपाना चाहा था, वह स्वयं भी उसको सुनना नहीं चाहती थी। परन्तु दो तीन दिन के भीतर उसका विचार बदल गया। बहुत कुछ उस से छुपाया जा रहा था। अब वह चाहने लगी कि कोई उसे सब कुछ बता दे। वह बुरे से बुरा समाचार भी सुनने के लिये तैयार थी, परन्तु इस प्रकार छिपाव और परायापन सहन करने के लिये किसी भी स्थिति में तैयार नहीं थी। दो दिन और बीत गये। उसे विश्वास हो गया कि वह इस घर में अभी तक परायी थी। सारे घर पर उदासी के बादल छाये थे मानो जीवन रूठ गया था।

वह एक रात को पति के घुटनों पर सिर रख कर रो पड़ी। कहने लगी, “विवाह की खुशी क्या केवल इतने ही दिन चलती है! क्या सारा जीवन इस घर में इस प्रकार बगैर हँसी खुशी के ही बिताना पड़ेगा?”

पति ने गोरे मासूम चेहरे से हँसी खुशी की तड़प को दो होठों में ले लिया। परन्तु सवेरे की ताज़गी में दुल्हन ने वही प्रश्न दोहराया, “आप मुझ से क्या छुपा रहे हैं? देख रही हूँ कि मम्मी पापा भी कोई बात छुपाने के लिये अन्दर ही अन्दर आपस में उलझते...क्या मुझे दहेज कम मिला है, इसलिए?”

“नहीं पगली।” गोपाल ने पत्नी का गोरा हाथ आँखों पर छुआ कर कहा, “तेरे रुपहले रंगी की तुलना में दहेज की गिनियाँ भी हार गई, रानी!”

“रहने दो मज़ाक।” दुल्हन की पलकें नम हो गईं। वह नैपकिन लेकर मुँह धोने चली गई। सास के कमरे का दरवाजा अभी तक बंद था, परन्तु ऐसा लग रहा था, अन्दर सास ससुर और बच्चों का समूह बहुत पहले जाग चुके थे। दुल्हन अधखुले द्वार के पास आकर मुख पोंछ रही थी कि अचानक उसके हाथ रुक गये। कमरे में उसके ससुर की आवाज तेज़ हो गई थी, “काश, तुझ पर भगवान की मार पड़े, गोपाल की माँ!”

“गर्म क्यों हो रहे हो? अब कपड़े उतार, भुक्खड़ बन कर खड़े हो जाओ सब।”

“धंधा करना भुक्खड़ बनना है क्या? फिर जहाँ दुनियाँ वहाँ हम।”

“मैं कहती हूँ कि दुनिया में प्रतिष्ठित धंधे आपके लिए खत्म हो गये थे? बस पेटियाँ बनाने का धंधा ही जाकर बचा है?”

दरवाजे के बाहर खड़ी दुल्हन ने लम्बी साँस ली।

ससुर ने गला खंखारते हुए कहा, “तुझे रोकता कौन है, तू ही चल कर नया धंधा ढूँढ़ दे!”

“आप लहंगा दुपट्टा पहन कर घर में बैठो, तो मैं धंधा ढूँढ़ लाऊँ।”

“अरे भाग्यवान, तू ने लहंगा दुपट्टा पहना कर तो बिठा दिया है। अभी और फाँसी दोगी क्या? पंद्रह दिन हो गये हैं काम बंद हुए.....अब तो दम घुट रहा है। बहू आई। वह भी नई पुरानी हो गई। अब क्यों नहीं काम करने दे रही हो?”

“मैं यह काम बंद करवा कर ही चैन की साँस लूँगी। कोई एक बेटा तो नहीं है हमारा कि चिन्ता दूर हुई। अभी तो लाईन लगी है। पहले केवल अपनी संतान थी। अन्दर बैठे कुछ भी करते रहे। अब घर में पराई संतान आई है। अब यह परदा नहीं रहेगा।”

“ढक्कन क्या वैसे ही रखा था दुल्हन के सिर पर?”

अचानक एक बच्चा अन्दर से दौड़ता हुआ निकला और दरवाजा खुला छोड़कर भाग गया। दुल्हन हक्की बक्की रह गई। मानो चोरी करते हुए पकड़ी गई थी। सास ससुर भी चौंक गये। सब बच्चे शांत हो गये। दुल्हन नैपकिन खूँटी पर टाँगकर, सास के पास खटिया पर आकर बैठी। सास ने लम्बी साँस लकर, रज़ाई उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा, “बहू, पैर ऊपर करके रज़ाई में आकर बैठो।”

दुल्हन का मन भर आया। उसने धीरे से रज़ाई घुटनों पर डाल कर कहा, “आप मेरा कितना खयाल रख रही हो, मम्मी!”

सास के मुख पर मुस्कराहट आ गई। आँखों में से आँसू छलक पड़े। मानो कह रही थी, “हाँ बेटी बहुत खयाल रख रही हूँ तेरा, परन्तु पड़ रहा है मुझे बहुत महँगा।”

दुल्हन ने अपनी बड़ी बड़ी गहरी आँखें उठाकर सास की ओर देखा तो उसके मन में श्रद्धा भर आई। पलकें झुकाकर, नाखूनों से पालिश खरोंचते हुए उसने कहा, “मम्मी, पूना में आप जिस घर में मुझे देखने आई थीं, वह मेरी मौसी का घर था हमारा घर तो बड़ौदा में है।”

दुल्हन के मीठे स्वर तथा गंभीर लहजे ने सब का ध्यान आकर्षित कर लिया। दुल्हन आँखें झुकाकर अपनी ही धुन में कहती रही, “बड़ौदा वाला घर तो आपके घर जैसा ही है। मेरे पिताजी अब भले ही कपड़े की दुकान पर नौकरी करते हैं, परन्तु कुछ समय पहले वे बाज़ार में पटरी पर छोटी दुकान लगाकर बैठते थे।”

कमरे में बैठे हुए सभी व्यक्ति चौंक गये। सभी दुल्हन की ओर देख रहे थे। परन्तु दुल्हन ने सारा साहस बटोर कर जो कहना चाहा था, वह सब कह चुकी थी। इसलिये थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद सब की नज़रों को दुल्हन के मुख से हटना पड़ा था।

चाय पीकर सब निवृत्त हुए तो दुल्हन ने देखा, उसके ससुर चाबी लेकर पास वाली बैरक का दरवाजा खोलने के लिये चले गये। सास ने बहुत आवाज़ें दीं “सुनिये न.....सुनिये न.....” परन्तु ससुर धीमे स्वर में, “चिल्लाती रहो” कहते हुए चले गये। थोड़े समय बाद पास वाली बैरक में से टीन के पत्तों की आवाज़ आने लगी। एकएक कर के सब बच्चे वहाँ चले गये। केवल गोपाल घर पर ही रहा। आखिर वह भी दुल्हन से नज़र बचाकर पास वाली बैरक की ओर जाने लगा कि अचानक बाथरूम

से निकलती हुई दुल्हन से उसकी नज़र टकरा गई। गोपाल को शर्म भरी हँसी आ गई। परन्तु दुल्हन मासूम दृष्टि से पति की ओर देखती रही। मानो कह रही हो, “आप भी मुझ से छुपा रहे हैं?”

गोपाल के पास इस उपालंभ का उत्तर नहीं था। उसकी आँखों में एक क्षण के लिये मजबूरी झलकी, दूसरे ही क्षण उस की नज़र झुक गई। दुल्हन एक हाथ से कपड़ों की बाल्टी और दूसरे हाथ से गीले बाल पकड़कर जाने लगी। गोपाल दुल्हन को दरवाज़े के अन्दर जाता देखता रहा।

अन्दर से आवाज़ आई, “ये नौकरानी की तरह काम करने आई हो क्या यहाँ?” गोपाल पहचान गया, यह आवाज़ उसकी माँ की थी और बाद में आई सबरे की बयार सी शीतल और घुँघरुओं की झंकार सी मधुर आवाज़, “मम्मी, काम करने में कौन सी बुराई है?” गोपाल का सीना फूल गया। वह हँसता हुआ जाकर पास वाली बैरक में अपने काम में लगा।

दीवार वाली पुरानी घड़ी बारह बजा रही थी कि दुल्हन हाथ में पकौड़ों की थाली लिये धीमी गति से बैरक के दरवाज़े में घुसी। पूरी बैरक में शांति छा गई। ससुर, दो देवर, मंझली ननद और गोपाल सब दुल्हन की ओर देखने लगे। दुल्हन के मुख से मधुर मुस्कराहट छलक पड़ी। पकौड़ों की थाली आगे बढ़ाकर उसने कहा, “खाइये।” ससुर ने हाथ बढ़ाकर दो पकौड़े उठाये और सिर हिला दिया। गोपाल ने थाली लेकर भाई बहनों में बाँटी। खाते हुए सभी मुस्करा रहे थे। मानो कह रहे थे, “अरे राज तो खुल गया।” दुल्हन ने उन मुस्कराहटों में मानो अपनेपन का खजाना पा लिया था। जब वह लौट रही थी, तब उस के पैरों में थिरकन थी और मन में कोई गीत गूँज रहा था। लेकिन उसने घर में आकर देखा, सास चूल्हे के पास बुझी बुझी सी बैठी है। दुल्हन ने पकौड़ों वाली थाली पीछे छुपा कर आवाज़ दी, “मम्मी!”

सास चौंक गयी। उसने कहा, “बेटी, पकौड़ों वाली थाली यहाँ से तुम ले गई क्या?”

बहू ने खाली थाली आगे बढ़ाते हुए कहा, “मम्मी, आज मेहनत कैद में से आजाद हुई है। उस खुशी में मैं सब पकौड़े बाँट कर आई हूँ।”

“बेटी, मैंने तो बहुत ढकना चाहा.....”

“परन्तु मम्मी, देखिये कारखाने में कैसी चहल पहल हो गई है। लग रहा है, मानो रूठा हुआ जीवन फिर लौट आया है।”

सास, बहू के मुख को देखती रही। -

अनुवाद : खीमन यू. मूलाणी

